

परमेश्वर का नियम

Parmeshwar Ka Niyam

आज के ईसाई के लिए परमेश्वर का नियम

parmeshwarkaniyam.org

परिशिष्ट 8f: परमप्रसाद सेवा — यीशु का अंतिम भोजन पास्का था

यह पृष्ठ उस श्रूखला का हिस्सा है जो परमेश्वर की उन व्यवस्थाओं की पड़ताल करती है जिन्हें केवल तभी माना जा सकता था जब यरुशलेम में मंदिर खड़ा था।

- परिशिष्ट 8a: वे परमेश्वर की व्यवस्थाएँ जिन्हें मंदिर की आवश्यकता थी
- परिशिष्ट 8b: बलिदान — आज इन्हें मानना क्यों असम्भव है
- परिशिष्ट 8c: बाइबिल के पर्व — आज इनमें से कोई भी क्यों नहीं रखा जा सकता
- परिशिष्ट 8d: शुद्धिकरण की व्यवस्थाएँ — मंदिर के बिना इन्हें मानना क्यों असम्भव है
- परिशिष्ट 8e: दशमांश और पहिलौठे फल — आज इन्हें मानना क्यों असम्भव है
- परिशिष्ट 8f: परमप्रसाद सेवा — यीशु का अंतिम भोजन पास्का था (यह पृष्ठ)
- परिशिष्ट 8g: नजीर और मन्नत की व्यवस्थाएँ — आज इन्हें मानना क्यों असम्भव है
- परिशिष्ट 8h: मंदिर से संबंधित आंशिक और प्रतीकात्मक आज्ञाकारिता
- परिशिष्ट 8i: क्रूस और मंदिर

“कम्यूनियन सेवा” (प्रभु-भोज) उन सबसे शक्तिशाली उदाहरणों में से एक है जिन्हें यह श्रूखला उजागर कर रही है: प्रतीकात्मक “आज्ञाकारिता” जो मनुष्यों ने गढ़ी ताकि उन आज्ञाओं की जगह ले सके जिन्हें परमेश्वर ने स्वयं असम्भव बना दिया जब उसने मंदिर, वेदी और लेवीय याजक-वर्ग को हटा दिया। परमेश्वर की व्यवस्था ने कभी यह आज्ञा नहीं दी कि बलिदानों या फसह की जगह बार-बार किया जाने वाला रोटी और दाखरस का कोई समारोह मनाया जाए। यीशु ने कभी मंदिर की व्यवस्थाओं को रद्द नहीं किया, और न ही उन्होंने उन्हें बदलने के लिए कोई नई विधि स्थापित की। आज जिसे लोग “प्रभु का भोज” या “लॉइस सपर” कहते हैं, वह तोराह की आज्ञा नहीं है और न ही परमेश्वर की कोई ऐसी व्यवस्था है जो मंदिर से स्वतंत्र हो। यह मनुष्यों द्वारा गढ़ा गया समारोह है, जो इस गलत समझ पर टिका है कि यीशु ने अपने अंतिम फसह के समय वास्तव में क्या किया।

व्यवस्था का नमूना: वास्तविक बलिदान, वास्तविक लहू, वास्तविक वेदी

व्यवस्था के अधीन क्षमा और स्मरण कभी ऐसे प्रतीकों से नहीं जुड़े थे जिनमें बलिदान न हो। मूल नमना स्पष्ट है: पाप का समाधान तब होता है जब वास्तविक लहू को वास्तविक वेदी पर उस स्थान पर चढ़ाया जाता है जिसे परमेश्वर ने अपने नाम के लिए चुना (लैव्यव्यवस्था 17:11; व्यवस्थाविवरण 12:5-7)। यह बात हर दिन के बलिदानों, पापबलि, होमबलि और स्वयं फसह के मेम्ने पर लागू होती है (निर्गमन 12:3-14; व्यवस्थाविवरण 16:1-7)।

फसह का भोजन कोई मनमाना “स्मरण-समारोह” नहीं था। यह एक आज्ञाकृत विधि थी, जिसमें था:

- एक वास्तविक मेम्ना, जिसमें कोई दोष न हो
 - निर्गमन 12:3 — प्रत्येक घराने को परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार एक मेम्ना लेना था।
 - निर्गमन 12:5 — मेम्ना बिना दोष का होना था, पहले वर्ष का पूरा नर।
- वास्तविक लहू, ठीक उसी प्रकार संभाला हुआ जैसा परमेश्वर ने आज्ञा दी
 - निर्गमन 12:7 — उन्हें मेम्ने का लहू लेकर अपने घरों के चौखट और द्वार की चौंखटों पर लगाना था।
 - निर्गमन 12:13 — वही लहू उनके लिए चिन्ह होगा; परमेश्वर केवल उसी स्थान को छोड़ देगा जहाँ वास्तविक लहू लगाया गया होगा।
- खमीररहित रोटी और कड़वी जड़ी-बूटियाँ
 - निर्गमन 12:8 — उन्हें मेम्ने का मांस खमीररहित रोटी और कड़वी जड़ी-बूटियों के साथ खाना था।
 - व्यवस्थाविवरण 16:3 — उन्हें सात दिन तक खमीर वाला रोटी नहीं खानी थी, केवल “कठिनाई की रोटी” खानी थी।
- निश्चित समय और निश्चित क्रम
 - निर्गमन 12:6 — मेम्ने को महीने के चौदहवें दिन सन्ध्या के समय मारना था।
 - लैव्यव्यवस्था 23:5 — फसह पहला महीने के चौदहवें दिन नियत समय पर होता है।

बाद में परमेश्वर ने फसह को केन्द्रित कर दिया: मेम्ने को अब किसी भी नगर में बलि नहीं किया जा सकता था, केवल उसी स्थान पर जहाँ उसने चुना था, अपनी वेदी के सामने (व्यवस्थाविवरण 16:5-7)। पूरे प्रबन्ध की नींव मंदिर पर थी। बिना बलिदान के “फसह का प्रतीक” जैसी कोई बात व्यवस्था में नहीं है।

इसाएल ने छुड़ाए जाने को कैसे याद रखा

परमेश्वर ने स्वयं निर्धारित किया कि इसाएल मिस से निकलने को कैसे याद रखेगा। यह न तो केवल चिन्तन से होना था और न ही किसी प्रतीकात्मक इशारे से; यह उस वार्षिक फसह की सेवा के द्वारा होना था जिसे उसने आज्ञा दी थी (निर्गमन 12:14; 12:24-27)। बच्चों को पूछना था, “तुम इस सेवा से क्या मतलब रखते हो?” और उत्तर मेम्ने के लहू और उस रात परमेश्वर के कामों से सीधे जुड़ा हुआ था (निर्गमन 12:26-27)।

जब मंदिर खड़ा था, तो विश्वासयोग्य इसाएली यरुशलेम जाते, पवित्रस्थान में मेम्ना कटवाते और फसह को उसी प्रकार खाते जैसा परमेश्वर ने आदेश दिया था (व्यवस्थाविवरण 16:1-7)। किसी भविष्यद्वक्ता ने कभी यह घोषणा नहीं की कि एक दिन इसे केवल थोड़ा-सा रोटी और थोड़ी-सी दाखरस से संसार भर की इमारतों में मनाए जाने वाले किसी साधारण समारोह से बदला जाएगा। व्यवस्था इस “बदलाव” को नहीं जानती। वह केवल वही फसह जानती है जिसे परमेश्वर ने परिभाषित किया।

यीशु और उनका अंतिम फसह

सुसमाचार स्पष्ट हैं: जिस रात यीशु को पकड़वाया गया, वह जब अपने चेलों के साथ भोजन कर रहे थे, तब वह फसह था, कोई नया गैर-यहूदी (अन्यजाति) समारोह नहीं (मत्ती 26:17-19; मरकुस 14:12-16; लूका 22:7-15)। वह अपने पिता की आजाओं की पूरी आजाकारिता में चल रहे थे, वही फसह मानते हुए जिसे परमेश्वर ने ठहराया था।

उसी मेज़ पर यीशु ने रोटी ली और कहा, “यह मेरा शरीर है”; और कटोरा लेकर उसने अपने वाचा के लहू के बारे में बात की (मत्ती 26:26-28; मरकुस 14:22-24; लूका 22:19-20)। वह न तो फसह को रद्द कर रहे थे, न बलिदानों को समाप्त कर रहे थे, और न ही अन्यजाति धार्मिक सेवाओं के लिए नए नियम लिख रहे थे। वह समझा रहे थे कि परमेश्वर के सच्चे मेम्ने के रूप में उनकी मृत्यु व्यवस्था की उन सब आजाओं का पूरा अर्थ प्रकट करेगी जो पहले से दी जा चुकी थीं।

जब उन्होंने कहा, “मेरी स्मृति में यह किया करो” (लूका 22:19), तो “यह” वही फसह का भोजन था जो वे उस समय खा रहे थे — कोई नया समारोह नहीं जो व्यवस्था, मंदिर और वेदी से काट दिया गया हो। उनके मुख से कहीं भी यह आजा नहीं निकलती कि एक नया, मंदिर से स्वतंत्र अनुष्ठान स्थापित किया जाए जिसका अपना समय, अपने नियम और अपना “धर्माध्यक्ष-वर्ग” हो। यीशु पहले ही कह चुके थे कि वे व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं को मिटाने नहीं, बल्कि पूरा करने आए हैं, और यह कि व्यवस्था से एक छोटा-सा बिन्दु भी नहीं टलेगा (मत्ती 5:17-19)। उन्होंने कभी नहीं कहा, “मेरी मृत्यु के बाद फसह को भूल जाओ और जहाँ कहीं भी हो, वहाँ रोटी और दाखरस की एक सेवा बना लो।”

मंदिर हटाया गया, व्यवस्था रद्द नहीं हुई

यीशु ने मंदिर के नाश की भविष्यद्वाणी की थी (लूका 21:5-6)। जब यह घटना सन् 70 ईस्वी में पूरी हुई, तो बलिदान रुक गए, वेदी हटा दी गई और लेवीय सेवा समाप्त हो गई। परन्तु यह सब व्यवस्था को रद्द करना नहीं था। यह न्याय था। बलिदानों और फसह के सम्बन्ध में दी गई आजाएँ अब भी लिखी हुई हैं, बिना बदले। केवल इतना है कि उन्हें मानना असम्भव हो गया है, क्योंकि परमेश्वर ने स्वयं वह प्रणाली हटा दी जिसमें वे चलती थीं।

मनुष्यों ने क्या किया? इस तथ्य को स्वीकार करने के बजाय कि कुछ आजाएँ केवल आदर की जा सकती हैं पर तब तक मानी नहीं जा सकतीं जब तक परमेश्वर स्वयं पवित्रस्थान को पुनःस्थापित न करे, धार्मिक अगुवों ने एक नया अनुष्ठान बना लिया — कम्यूनियन सेवा — और घोषित कर दिया कि अब यही “यीशु को स्मरण करने” और “उसके बलिदान में सहभागी होने” का मार्ग है। उन्होंने फसह की मेज़ से रोटी और कटोरा उठाकर उनके चारों ओर एक बिल्कुल नई सरचना खड़ी कर दी — मंदिर के बाहर, व्यवस्था के बाहर, और उस सब के बाहर जो परमेश्वर ने स्वयं आजा दी थी।

कम्यूनियन सेवा क्यों केवल प्रतीकात्मक आजाकारिता है

कम्यूनियन सेवा को लगभग हर जगह मंदिर के बलिदानों और फसह के स्थानापन्न के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। लोगों से कहा जाता है कि कलीसिया की इमारतों में या किसी भी इमारत में रोटी खाने और दाखरस (या जूस) पीने से वे मसीह की आजा मान रहे हैं और उस बात को पूरा कर रहे हैं जिसकी ओर व्यवस्था इशारा करती थी। परन्तु यह वही प्रकार की प्रतीकात्मक आजाकारिता है जिसे परमेश्वर ने कभी अधिकृत नहीं किया।

व्यवस्था ने कभी किसी से यह नहीं कहा कि बिना वेदी और बिना लहू के कोई प्रतीक आजा दिए गए बलिदानों की जगह ले सकता है। यीशु ने कभी यह नहीं कहा। भविष्यद्वक्ताओं ने कभी यह नहीं कहा। कोई भी विधि इस बात को परिभाषित नहीं करती कि:

- इस नयी कम्यूनियन को कितनी बार करना चाहिए

- किसे इसकी अध्यक्षता करनी चाहिए
- यह कहाँ की जानी चाहिए
- यदि कोई व्यक्ति कभी इसमें भाग न ले तो क्या होगा

फरीसियों, सदूकियों और शास्त्रियों की तरह, इन सब विवरणों को मनुष्यों ने ही गढ़ा है (मरकुस 7:7-9)। पूरी-की-पूरी शिक्षाएँ इस समारोह पर खड़ी की गई हैं — कोई इसे “सक्रामेंट” कहता है, कोई “वाचा-नवीनीकरण” — परन्तु यह सब न तो परमेश्वर की व्यवस्था से आता है और न ही सुसमाचारों में यीशु के उन वचनों से जो उनके पूरे सन्दर्भ के साथ समझे जाएँ।

इसका परिणाम दुखद है: भीड़-की-भीड़ यह मानती है कि वे परमेश्वर की आज्ञा मान रहे हैं जबकि वे एक ऐसे अनुष्ठान में भाग ले रहे हैं जिसे उसने कभी आज्ञा ही नहीं दी। सच्ची मंदिर-व्यवस्थाएँ आज भी विद्यमान हैं, पर वे इस कारण मानी नहीं जा सकतीं कि परमेश्वर ने स्वयं मंदिर हटा दिया; और इस तथ्य को भय और दीनता के साथ मानने के स्थान पर लोग इस बात पर अड़े हैं कि एक प्रतीकात्मक सेवा उनके स्थान पर खड़ी हो सकती है।

नए नियम गढ़े बिना यीशु को याद रखना

धर्मग्रन्थ हमें यह बताए बिना नहीं छोड़ते कि मसीह के स्वर्गारोहण के बाद उसे कैसे आदर देना है। स्वयं यीशु ने कहा, “यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे” (यूहन्ना 14:15)। और उसने यह भी पूछा, “तुम मुझे ‘हे प्रभु, हे प्रभु’ क्यों कहते हो, और जो मैं कहता हूँ वह नहीं करते?” (लूका 6:46)।

उन्हें याद रखने का मार्ग नए गढ़े हुए समारोहों के माध्यम से नहीं, बल्कि उन सब बातों को मानने के द्वारा है जो उनके पिता ने पहले से मसीह से पहले आए भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बोलीं और स्वयं मसीह ने बोलीं।

जो मान सकते हैं उसे मानते हैं, और जो नहीं मान सकते उसे आदर देते हैं

व्यवस्था आज भी अक्षुण्ण है। फसह और बलिदान की प्रणाली आज भी सदा रहने वाली विधियों के रूप में तिखी हुई है, पर उनकी आज्ञाकारिता अब असम्भव है, क्योंकि परमेश्वर ने स्वयं मंदिर, वेदी और याजक-वर्ग को हटा दिया है। कम्यूनियन सेवा इस सच्चाई को नहीं बदलती। वह प्रतीकात्मक रोटी और प्रतीकात्मक दाखरस को आज्ञाकारिता में नहीं बदलती। वह मंदिर की व्यवस्थाओं को पूरा नहीं करती। वह तोराह से नहीं आती, और यीशु ने उसे कभी किसी नयी, स्वतंत्र व्यवस्था के रूप में राष्ट्रों के लिए आज्ञा नहीं दी।

हम आज वही मानते हैं जिसे बिना मंदिर के भी माना जा सकता है — वे आज्ञाएँ जो मंदिर पर निर्भर नहीं हैं। और जिन्हें मानना आज असम्भव है, उन्हें हम आदर देते हैं, यह कहकर नहीं कि वे मिट गई हैं, बल्कि किसी भी स्थानापन्न को गढ़ने से इनकार करके। कम्यूनियन सेवा एक मानव प्रयास है उस रिक्तता को भरने का जिसे परमेश्वर ने स्वयं बनाया है। प्रभु का सच्चा भय हमें इस “आज्ञाकारिता के भ्रम” को ठुकराने और उसी पर लौटने को बुलाता है जिसे उसने वास्तव में आज्ञा दी।